बिहार के चार कृषि जलवायु क्षेत्रों में गम्हार के क्लोन का परीक्षण शुरू

■ मनीष कुमार भारतीय

गोपालगंज। बिहार की जलवायु के लिहाज से बहुउपयोगी पौधा गम्हार के क्लोन का परीक्षण शुरू किया गया है। हाल ही में इसके पौधे राज्य के चार अलग-अलग कृषि जलवायु क्षेत्र में लगाए गए हैं। इसमें मधुबनी, वैशाली, पूर्वी चंपारण व मुजफ्फरपुर क्षेत्र शामिल हैं। परीक्षण के लिए हर जिले में गम्हार के छह-छह सौ पौधे लगा कर वन उत्पादकता संस्थान, रांची के वैज्ञानिक मॉनिटरिंग कर रहे हैं। परीक्षण से अगले पांच वर्षों में पौधे के अलग-अलग जलवायु में विकास, उसकी ऊंचाई व गोलाई का पता चलेगा। इसके बाद क्षेत्र विशेष के लिए उपयुक्त गम्हार का क्लोन प्रभेद तैयार कर रिलीज किया जाएगा। दरअसल तेजी से हो रहे जलवायु परिवर्तन का कुप्रभाव गम्हार सहित अन्य इमारती लकड़ी के पौधे पर पड़ा है। इसकी बढ़वार व गुणवत्ता प्रभावित हुई है। लिहाजा राज्य की जलवायु के मुताबिक नवीनतम प्रभेदों को तैयार करने में वैज्ञानिक जुटे हैं। इसके पूर्व शीशम व पॉपुलर के क्लोन प्रभेद भी शोध व अनुसंधान कर रिलीज किए जा चुके हैं। बिहार में गम्हार के क्लोन का परीक्षण भारत सरकार के वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के कैम्पा मद से किया जा रहा है।

सर्वश्रेष्ठ पौधे के बीज से तैयार किए गए क्लोन : वन उत्पादकता संस्थान के वैज्ञानिक के अनुसार

6-6 सौ पौधे हर क्षेत्र में लगा कर वैज्ञानिक कर रहे हैं पौधे के विकास की मॉनिटरिंग

60 गुणवत्ता के लिहाज से सर्वश्रेष्ठ पौधे के बीज से तैयार किए गए गम्हार के क्लोन

परीक्षण के लिए तैयार किए गए गम्हार के क्लोन। ● हिन्दुस्तान

गम्हार के क्लोन प्रभेद के परीक्षण के लिए बिहार व झारखंड में पहले से लगे 192 पौधों का गुणवत्ता के आधार चयन किया गया। फिर सर्वश्रेष्ठ 60 पौधों के बीज से उगे पौधों से क्लोन तैयार किया गया।

राज्य के चार अलग-अलग कृषि जलवायु क्षेत्रों में गम्हार का क्लोन तैयार करने के लिए पौधे लगा कर परीक्षण किया जा रहा है। अगले-पांच वर्षों में परीक्षण का निष्कर्ष मिल जाएगा। इसके बाद इसके क्लोन प्रभेद को रिलीज किया जाएगा।

डॉ. आदित्य कुमार, वरीय वैज्ञानिक, वन उत्पादकता संस्थान, रांची

गम्हार की लकड़ी के उपयोग

इमारत की खिड़की व दरवाजे बनाने में लुगदी कागज, पेंसिल बनाने में खिलौने व लाईवुड तैयार करने में पत्तियों से कई तरह की बनती है आर्युवेदिक दवाएं।

खास बातें

10 वर्षों में गम्हार के पौधे हो जाते हैं तैयार। एक पौधे से तीस हजार तक की होती है आमदनी। पर्यावरण के लिए उपयुक्त होता है गम्हार का पौधे। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार लकड़ी होती है पवित्र।

इमारती लकड़ियों के कम हो रहे पौधे

वैज्ञानिकों के अनुसार विगत दो दशकों में शहरीकरण व विकास की गति तेज होने से इमारती लकड़ियों की मांग कई गुनी बढ़ी है। लेकिन, लोग इसके पौधे नहीं लगा रहे हैं। दरअसल बाढ़, सुखाड़, तापमान में उतार-चढ़ाव व कीट व्याधियों के लगने से खासकर शीशम व गम्हार के पौधे विकास नहीं कर पा रहे हैं।